'डाक पंजियन सं. जयपुर सिटी/247/2018-20
स.प.सं. 66332/97

पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 22 अंक 3 19 अप्रेल 2018 कुल पृष्ठः 8 एक प्रतिः रुपए 7.00 वार्षिक : रुपए 150/-

'पहले शस्त्र से रक्षा की, अब शास्त्र से करें'

राजपूतों ने सदियों तक तलवार आदि शस्त्रों के बल पर इस राष्ट्र की रक्षा की। कालांतर में सामाजिक व्यवस्थाकारों के प्रभाव में आकर धर्म के वास्तविक अर्थ को भूल गए। परिणाम स्वरूप शास्त्र पास में नहीं रहा और राष्ट्र गुलाम हो गया। आज फिर राजपूतों को आगे आने की आवश्यकता है, लेकिन अब शस्त्र की अपेक्षा शास्त्र को अपना साधन बनाएं। गीता आपका धर्मशास्त्र है उसे अपनाकर जन-जन तक पहुंचाएं। पूरे संसार को धर्म का स्वरूप समझाएं एवं रूढ़ियों व भ्रमों से संसार की रक्षा करें। स्वामी अड़गड़ानंद जी महाराज ने अपने जोधपुर प्रवास के दौरान उनके साथ बाड़मेर से आए स्वयंसेवकों को जाने की अनुमति मांगने पर कुछ ऐसा ही संदेश दिया। स्वामीजी 8 अप्रेल को बाड़मेर के महाबार स्थित परमहंस आश्रम पधारे एवं 2 दिन तक वहां श्रद्धालुओं को दर्शन, सानिध्य एवं सत्संग से लाभान्वित किया। 9 अप्रेल की सायं स्वामी जी बाड़मेर स्थित संघ के शिविर स्थान भारतीय ग्राम्य आलोकायन पधारे एवं वहां प्रवचन भी किया। स्वामीजी ने उपस्थित श्रद्धालुओं को रामायण, महाभारत एवं अन्य पौराणिक आख्यानों द्वारा समझाया कि धर्म एक ही होता है। वह कभी बदलता नहीं है। रुढ़ियां धर्म नहीं होती, भ्रमों के कारण जीने खाने की व्यवस्था को ही धर्म मान लिया गया जिसके परिणाम स्वरूप धर्म का असली स्वरूप विस्मृत हो गया। उन्होंने कहा कि समाज चलाने के तरीके समय और परिस्थिति के अनुसार बदलते रहते हैं, वे धर्म नहीं हैं बल्कि एक परमात्मा की शरण ही धर्म है। उन्होंने कहा कि भारत का दुर्भाग्य रहा कि विद्यालयों में पढ़ाने वाले अध्यापकों को धर्माचार्य मान लिया गया जबकि धर्म उनके क्षेत्र की वस्तु ही नहीं थी। धर्म तो तत्वदर्शी महापुरुषों के क्षेत्र का विषय है। लेकिन इन विद्यालयी अध्यापकों द्वारा संचालित भ्रमपूर्ण व्यवस्था ने अनेक प्रकार के मूर्खतापूर्वक नियम बनाए जिसके परिणाम स्वरूप भारत कमजोर होता गया एवं आखिर में गुलाम हो गया।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

गौतमसिंह मगरीवाड़ा की प्रथम रैंक

सिरोही जिले के मगरीवाड़ा गांव निवासी महेन्द्रसिंह मगरीवाड़ा के पुत्र गौतमसिंह का गुजरात कैडर से न्यायिक मजिस्ट्रेड के रूप में प्रथम रैंक के साथ चयन हुआ है। प्रारम्भ से ही मेधावी छात्र रहे गौतमसिंह ने सिरोही में अध्ययनरत रहते समय संघ के शिविर भी किए हैं। इनका पूरा परिवार रेवदर में संघ कार्य में सहयोगी है।

क्षत्रिय धर्म संसद के गठन हेतु सम्मेलन

क्षत्रिय धर्म संसद के गठन को लेकर 7 अप्रेल को महाराणा प्रताप भवन केशवपुरम्, चैतक चौक, लारेंस रोड दिल्ली में एक गोलमेज सम्मेलन आयोजित किया गया। वर्ल्ड ओरगेनाइजेशन ऑफ राजपूत के डॉ. जयेन्द्रसिंह जाड़ेजा के संयोजन में हुए इस कार्यक्रम में डॉ. जाड़ेजा के विशेष आग्रह पर माननीय संघ प्रमुख श्री भी इस सम्मेलन में शामिल हुए। लगभग 40 संस्थाओं के प्रतिनिधियों के सम्मेलन को संबोधित करते हुए माननीय संघ प्रमुख श्री ने कहा कि श्री क्षत्रिय युवक संघ का लक्ष्य क्षत्रिय के रूप में क्षात्रधर्म का पालन करते हुए ईश्वर प्राप्ति है। संघ के लिए संगठन लक्ष्य नहीं बल्कि साधन है। लक्ष्य को प्राप्त करने का माध्यम मात्र है।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

पहाड़सिंह आसाणा का देहावसान

संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक पहाड़सिंह आसाणा का 5 अप्रेल को देहावसान हो गया। मूलतः जालोर जिले के निवासी एवं कालांतर में सिरोही जिले के मनादर गांव में आकर बसे पहाड़सिंह 8 से 10 सितम्बर 1954 के बीच हुए प्रा.प्र.शि. जोधपुर में संघ के सम्पर्क में आए। 24 मई से 7 जून 1958 को हुए सुंधा माता उ.प्र.शि. में वे संघ के निकट सानिध्य में आए। पारिवारिक जिम्मेदारियों के चलते कुछ समय को छोड़कर वे निरन्तर संघ के सम्पर्क में रहे। उन्होंने 15 उ.प्र.शि., 13 मा.प्र.शि., 9 प्रा.प्र.शि. एवं 8 विशेष शिविर किए। गांव में कृषि कार्य के साथ-साथ वे राजनीति में भी सक्रिय रहे। मनादर ग्राम पंचायत के लंबे समय तक सरपंच रहे एवं शिवगंज पंचायत समिति के उप प्रधान भी रहे। ईश्वर दिवगंत आत्मा को अपने श्री चरणों में स्थान देवें।

महाराव शेखा संस्थान द्वारा अभिनन्दन

में महाराव शेखाजी के नाम से सैनिक प्रशिक्षण अकादमी
स्थापित किये जाने की घोषणा करने पर शेखावाटी के आमजन
की ओर से कोटी-कोटी अभिवादन एवं अभिनन्दन।

इस वित्तीय वर्ष के बजट में महाराव शेखाजी की जन्म स्थली अमरसर में उनके जन्म स्थान पर एक पैनोरमा बनाए जाने की घोषणा की गई थी। इस पैनोरमा में महाराव शेखाजी के जीवन की झांकी प्रस्तुत करने के लिए विभिन्न सामग्री तो प्रस्तुत की ही जाएगी, अमरसर के गढ़ को भी एक आाकर्षक पर्यटन स्थल के रूप में विकसित किया जाएगा। इसके अतिरिक्त महाराव शेखाजी की निर्वाण स्थली रलावता (सीकर) में एक सैनिक प्रशिक्षण केन्द्र की स्थापना की भी बजट में घोषणा की गई थी। ऐसा प्रशिक्षण केन्द्र पहले से देश में मात्र एक ही है। शेखाजी के नाम से खोले जाने वाले इस प्रशिक्षण केन्द्र से सेना में जाने के इच्छुक प्रदेश वासियों को सीधा लाभ होगा। महाराव शेखाजी के नाम पर की गई इन दोनों घोषणाओं के प्रति मुख्यमंत्री का आभार प्रदर्शित करने हेतु 'महाराव शेखा संस्थान' द्वारा 4 अप्रेल को राजपूताना शेरेटन होटल में एक कार्यक्रम आयोजित किया गया।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

प्रणेता से प्रेरणा

पूज्य तनसिंह जी श्री क्षत्रिय युवक संघ के प्रणेता हैं। उनका जीवन हम सब स्वयंसेवकों एवं सहयोगियों के लिए प्रेरणा का स्रोत है। उनके जीवन की हर घटना हमारे लिए दिशा दर्शक है जो हमें उनके मार्ग पर बढ़ने की प्रेरणा देती है। ऐसी ही प्रेरणादायी घटनाओं का संकलन पथप्रेरक के इस कॉलम में धारावाहिक रूप से प्रकाशित किया जा रहा है।

महापुरुषों के जीवन को देखें तो उनके जीवन की प्रत्येक गतिविधि कोई संदेश लिए होती है और उस संदेश को आत्मसात कर हम हमारे जीवन को श्रेष्ठ दिशा दे सकते हैं। पूज्य तनसिंह जी अपने जीवन में आत्मानुशासन के प्रति दृढ़ थे और उसी दृढ़ता ने उन्हें हर परिस्थिति में अपने लक्ष्य के प्रति दृढ़ बनाए रखने में सहयोग दिया। ऐसा ही अनुशासन उन्होंने अपनी आवश्यकताओं के बारे में अपना रखा था। उन्होंने अपनी आवश्यकताओं को दृढ़तापूर्वक सीमित रखा और उसी का परिणाम था कि किसी भी प्रकार का अभाव उनके मार्ग में बाधा नहीं बन पाया। जैसा कि विगत अंक में उल्लेख किया था कि लोकसभा चुनाव हारने के बाद 1967 में उनके सामने अपने एवं अपने साथियों की आजीविका का संकट खड़ा हुआ। इसी संकट से लड़ने के लिए उन्होंने कई प्रयोग किए। इसी प्रयोग में से एक था खेती करना। उन्होंने सिवाणा के निकट कुछ जमीन क्रय की एवं खेती करना प्रारम्भ किया। सिवाना में एक मकान किराए पर लिया एवं अपने 3-4 साथियों सहित वहीं रहते थे। उसी दौरान बाड़मेर के जिला कलक्टर अपने प्रशासनिक दौरे में सिवाणा आए। उन्हें पता चला कि बाड़मेर-जैसलमेर के पूर्व सांसद भी यहीं रहते हैं तो मिलने चले आए। कलक्टर साहब से बातचीत के दौरान उनके लिए चाय बनाकर लाई गई। लेकिन चाय का केवल एक ही कप लाया गया। कलक्टर साहब ने पूछा कि आपकी चाय कहां है तो किसी बहाने से टाल दिया और उन्हें चाय पिलाकर रवाना कर दिया। यह एक सामान्य सी घटना है लेकिन इसके पीछे छिपा सच यह है कि उस मकान में रहने वाले सभी लोगों में केवल तनसिंह जी के लिए ही चाय बनती थी इसलिए एक ही कप था। जब दूसरे कप की आवश्यकता ही नहीं थी तो क्यों खरीदा जाए। इससे भी आगे की बात यह है कि जब एक ही व्यक्ति चाय पीने वाले हैं तो चाय बनाने की तपेली भी अलग से क्यों खरीदी जाए। एक लोटा था उसी में चाय बनाई जाती थी। उस दिन भी वर्तमान संघ प्रमुख माननीय भगवानसिंह जी द्वारा लोटे में चाय बनाकर कलक्टर साहब को एक मात्र कप में पेश की गई। यह था उनका कठोर आर्थिक प्रबंधन एवं अपनी आवश्यकताओं को न्यूनतम करने का तरीका। उसी तरीके का परिणाम था कि उनके साथ रहने वाले लोग अपनी आवश्यकताओं को न्यूनतम करना सीख पाए और उस समय आए भयंकर आर्थिक संकट का भी अपने मूल काम से तनिक भी विचलित हुए बिना सामना कर पाए। कालांतर में इसी आर्थिक अनुशासन के कारण क्षत्रिय बंधु नामक सहकारी संस्था की स्थापना होकर साथ वालों के जीवन निर्वाह का भी पुख्ता प्रबंध हो पाया। इसलिए आवश्यक है कि हम सब उनके जीवन से प्रेरणा लेवें कि व्यक्ति का आर्थिक प्रबंधन आय कम होने से उतना नहीं बिगड़ता जितना आवश्यकताओं पर लगाम न होने से बिगड़ता है। पूज्य श्री के जीवन की ऐसी ही प्रेरणादायी घटनाओं को जानने के लिए निरन्तर पढ़ते रहें पथप्रेरक।

जीवनोपयोगी जानकारी-3

अभयसिंह रोडला

विगत दो अंकों में हमने दसवीं कक्षा के पश्चात् उपलब्ध विकल्प तथा उन विकल्पों को चुनते समय ध्यान में रखे जाने योग्य तथ्यों पर चर्चा की। किसी विषय वर्ग के चयन के बाद 12वीं कक्षा के पश्चात् हमारे पास क्या-क्या विकल्प उपलब्ध होंगे, इसकी सामान्य जानकारी भी होनी आवश्यक है। कॅरियर चयन को उचित दिशा देने में यह जानकारी अत्यन्त सहायक सिद्ध होती है। विशेष विषय वर्ग हेतु उपलब्ध विकल्पों से पूर्व हम उन सामान्य विकल्पों की चर्चा करेंगे जो सभी विषय वर्गों के विद्यार्थियों के लिए उपलब्ध रहते हैं। निम्नलिखित कोर्स/डिग्री सभी विषयों वर्गों के विद्यार्थियों हेतु उपलब्ध हैं :

(1) विधि / कानून (Law) : वकालत एवं न्यायिक क्षेत्र में कॅरियर निर्माण हेतु यह डिग्री आवश्यक है। 2012 के पश्चात् अधिकांश विधि विश्वविद्यालयों में प्रवेश CLAT परीक्षा (Common Law Admission Test) के द्वारा मिलता है। यद्यपि राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालय, दिल्ली तथा कुछ अन्य संस्थान अपने स्तर पर भी प्रवेश परीक्षा का आयोजन करते हैं। 12वीं कक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात् (किसी भी विषय वर्ग से) यह प्रवेश परीक्षा दी जा सकती है। कानून की डिग्री प्राप्त करते समय हमारे पास दो विकल्प रहते हैं। पहला - तीन वर्षीय विधि स्नातक डिग्री प्राप्त करना एवं दूसरा पांच वर्षीय स्नातक डिग्री, जिसमें विधि के अतिरिक्त एक अन्य विषय समूह भी उपलब्ध रहता है जैसे बी.ए.-एल.एल.बी., बी.एस.सी.- एल.एल.बी, बी.कॉम - एल.एल.बी., बी.बी.ए. - एल.एल.बी आदि। वकील, न्यायाधीश, विधि सलाहकार आदि बनने हेतु यह डिग्री आवश्यक है। इसके पश्चात् एक/दो वर्षीय स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम भी उपलब्ध रहता है।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

‘गुरु शिखर से’ (विविध विषयों का कॉलम)

विभूतियों के संरक्षक क्षत्रिय

स्वरूपसिंह जिंझनियाली

भारतीय रियासतों के राजा महाराजाओं के द्वारा 36 कौम के लिए अनेक भलाई के कार्य किए गए। उनके राज्यकाल में कोई भेदभाव पूर्ण कार्य नहीं किया जाता था। वे प्रजावत्सल थे और जनता को पुत्रवत प्यार करते थे। इन राजाओं ने अनेक परिवारों को आश्रय एवं नौकरियां दी। उनके द्वारा दिलाई गई शिक्षा से कई लोग आजादी के बाद भारत में संवैधानिक पदों पर आसीन हुए। गुजरात के सौराष्ट्र में अरब सागर के किनारे एक छोटी सी रियासत पोरबन्दर है यहां के शासक जेठवा राजपूत थे। करमचंद गांधी पोरबन्दर राजा के यहां नौकरी करते थे। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी उनके पुत्र थे एवं उनका जन्म पोरबन्दर में हुआ था तथा प्रारम्भिक शिक्षा भी यही हुई। बाद में कमरचंद गांधी जाड़ेजा राजपूतों की रियासत राजकोट में वहां के महाराजा के दीवान बन गए। राजकोट महाराजा ने ही गांधी जी को उनके पिता के आग्रह पर ब्रिटेन में वकालात की पढ़ाई के लिए भिजवाया था। बाद में गांधी जी भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन के पुरोधा एवं राष्ट्रपिता बने। कश्मीर खंगारोत कच्छावों (डोगरों) की रियासत थी। यहां के राजाओं ने अपनी प्रजा को शिक्षित करने में सबसे ज्यादा योगदान किया।

यहां के कश्मीरी पंडितों ने शिक्षा के बल पर तात्कालीन समय में भारत वर्ष में अनेक जगह उच्च पद प्राप्त किए। शेखावाटी की रियासत खेतड़ी (झुंझुनूं) के राजा फतेहसिंह के शिक्षक एवं दीवान पंडित नन्दलाल थे, उनके साथ उनके छोटे भाई पं. मोतीलाल भी खेतड़ी आए। कुछ वर्ष खेतड़ी में रहकर यह पंडित परिवार आगरा चला गया। जहां वे एक नहर के किनारे भवन लेकर रहने लगे। नहर के किनारे रहने के कारण बोलचाल में इनका नाम नेहरू पड़ गया जो बाद में इनका उपनाम बना। आगरा से यह परिवार इलाहाबाद चला गया। जहां पं. मोतीलाल वकालात करने लगे। यहीं उनके पुत्र पं. जवाहरलाल नेहरू का जन्म हुआ जो बाद में भारत के प्रथम प्रधानमंत्री बने। इस नेहरू परिवार का उत्तरप्रदेश की अमेठी एवं काला कांकर रियासतों के राज परिवार से आत्मीय संबंध रहा। पं. मोतीलाल अटल जयपुर रियासत के दीवान रहे। उनकी पुत्री कमला यही पली-पढ़ी। कमला की शादी पं. जवाहर लाल नेहरू से हुई। इस तरह नेहरू जयपुर के दामाद बने। जोधपुर रियासत में भी कश्मीरी पंडित काक दीवान रहे।

मालवा (मध्यप्रदेश) की होलकर रियासत इन्दौर में महू छावनी अंग्रेजों ने अपने सैनिकों के लिए बनाई थी। इसका अर्थ इस प्रकार है- MHOW (महू) मिल्ट्री हेड क्वार्टर ऑफ वार। यहां महू में डॉ. भीमराव अम्बेडकर का जन्म हुआ। उनके पिता महू में काम करते थे। भीमराव अम्बेडकर भारतीय संविधान के निर्माता हैं तथा दलित समाज के आदर्श। डॉ. अम्बेडकर को बड़ोदा के महाराजा गायकवाड़ ने उच्च शिक्षा के लिए इंगलैण्ड भेजा जहां वे प्रख्यात विधिवेता बनकर लौटे एवं बड़ोदा रियासत में नौकरी भी की। बड़ोदा गुजरात में बड़ी रियासत थी। उत्तर में मेहसाणा से लेकर दक्षिण में सूरत तक इसका फैलाव था। यहां के राजाओं ने बड़े-बड़े कस्बों में अपनी तरफ से स्कूल खोल रखे थे जहां पढ़ना अनिवार्य था। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने एक साक्षात्कार में बताया कि उनके गांव बडगांव में जो स्कूल है वह बड़ोदा रियासत के समय की है तथा वहां उनकी बनाई अच्छी पुस्तकालय भी है। वे प्रारम्भ में गांव में पढ़े एवं पुस्तकालय का खूब लाभ लिया। उन्होंने यहां विवेकानन्द का साहित्य पढ़ा। विवेकानंद को अपना आदर्श एवं प्रेरणास्त्रोत मानते हैं। खेतड़ी (राजस्थान) के राजा अजीतसिंह ने नरेन्द्र का नाम विवेकानन्द रखा था तथा सर्वधर्म सम्मेलन शिकागो (अमेरिका) भेजने की सारी व्यवस्था की थी। बीकानेर रियासत में मुस्लिम परिवार ‘हक’ राज का ऐलकार था। राज परिवार ने उनके एक पुत्र को दिल्ली के प्रतिष्ठित सेन्ट स्टीफन कॉलेज में पढ़ाया। यह परिवार स्वतंत्रता के बाद पाकिस्तान चला गया। जहां पर यह स्टीफन कॉलेज में महाराजा गंगासिंह द्वारा पढ़ाया गया लड़का वहां का सेनाध्यक्ष एवं राष्ट्रपति बना- नाम था जिया उल हक। कांग्रेस के विरोध में खड़ी राजनीतिक पार्टी जनसंघ, जो बाद में भारतीय जनता पार्टी बनी, को ग्वालियर राजमाता विजयराजे सिंधिया का नैतिक और आर्थिक सम्बल रहा। भारत के अन्तिम गवर्नर जनरल सर राजगोपालाचारी की बनाई गई स्वतंत्र पार्टी को जयपुर राजमाता गायत्री देवी सहित अनेक राजाओं व क्षत्रियों का सहयोग रहा। इन राजाओं ने अनेकों प्रजाहित कार्य किए एवं आजादी के बाद इनकी रियासतें चली जाने के उपरान्त भी समाज में अपनी सकारात्मक उपस्थिति दर्ज कराई। आने वाला समय इनकी उदारता को भले ही भूला दे परन्तु इनकी नैकी हमेशा अमर रहेगी।

बनासकांठा में सम्पर्क यात्रा

संघ के मध्य गुजरात संभाग के बनासकांठा प्रांत के 46 गांवों में संघ का संदेश घर-घर में पहुंचाने के लिए तीन दिवसीय सम्पर्क यात्रा का आयोजन किया गया। 29 से 31 मार्च तक तीन दल बनाकर तीन-तीन तहसीलों में यह यात्रा संपन्न हुई। प्रथम दल ने छन्नुभा पच्छेगाम के नेतृत्व में पांथावाड़ा, पोछवल, गांगूदरा, कोटड़ा, ओढव, वावदरा, सामलवाड़ा, शिया, जाड़ी, नेगाणा, अनापुर, रोदोड़ा, रामसण, नांदला व लाखणी में सम्पर्क किया। ईश्वरसिंह आरखी, अर्जुनसिंह सामलवाड़ा, सुमेरसिंह रामसण इस में छन्नुभा के सहयोगी रहे। दूसरे दल में दिग्विजयसिंह पलवाड़ा, अजीतसिंह कुणघेर, गुमानसिंह माडका व तनेराजसिंह लोरवाड़ा शामिल हुए। इन्होंने पीलुड़ा, माडका, भाटवर, जेलामा, काणोढ़ी, ध्रेधाणा, दुधवा और लाखणी में सम्पर्क किया। तीसरे दल में जगतसिंह वलासणा के साथ सूरजसिंह वातम, गणपतसिंह लाखणी, वाघूभा, जसपालसिंह फोरणा शामिल हुए। इस दल ने उबरी, कबाई, शिहोरी, थरा, राणकपुर, दियोदर, धनक, वाडा, फोरणा, लिलाधर, चिमड़ा, चालवा, धरणवा व लवाणा में सम्पर्क किया। तीनों दलों ने लाखणी में यात्रा का संयुक्त समापन किया। इस यात्रा में पुरानी बंद पड़ी शाखाओं को पुनः शुरू करने का निश्चय किया गया। अनेक स्थानों पर नई शाखाएं शुरू करने की चर्चा हुई। प्रा.प्र. शिविरों के प्रस्ताव आए एवं उच्च प्रशिक्षण शिविर हेतु पूर्व में शिविर कर चुके स्वयंसेवकों से सम्पर्क किया गया।

लाडनूं सुजानगढ़ प्रांत में सम्पर्क यात्रा

आगामी उच्च प्रशिक्षण शिविर की तैयारियों को लेकर लाडनूं सुजानगढ़ प्रांत में केन्द्रीय कार्यकारी गजेन्द्रसिंह आऊ के नेतृत्व में सम्पर्क यात्रा का आयोजन हुआ। 29 मार्च को कुचामन के स्वयंसेवकों से मिलकर 30 मार्च को प्रातः सिंघाणा पहुंचे। सिंघाणा के जगदीशसिंह, डूंगरसिंह, विजयराजसिंह आदि को लेकर गांव के स्वयंसेवकों व अभिभावकों से सम्पर्क किया। वहां से बिठुड़ा व छपारा में सम्पर्क कर डीडवाना पहुंचे। डीडवाना में वरिष्ठ स्वयंसेवक जवानसिंह सांवराद से मिलकर भण्डारी पहुंचे। भंडारी में सम्पर्क कर मामड़ोदा में वरिष्ठ स्वयंसेवक भंवरसिंह एवं शाखा के स्वयंसेवकों से मिले। वहां से रताऊ में सम्पर्क करते हुए निंबी जोधा पहुंच कर रात्रि विश्राम किया। 31 मार्च को घंटियाल, बैनाथा, जैतासर में सम्पर्क किया एवं तीनों गांवों में स्नेहमिलन आयोजित हुए। वहां से सुजानगढ़ सम्पर्क कर बोबासर पहुंचे एवं वहां पहले शिविर कर चुके स्वयंसेवकों से मिले। प्रांत प्रमुख विक्रमसिंह ढींगसरी व नंदसिंह बेड़ इस यात्रा में साथ रहे। 29 मार्च को प्रांत प्रमुख व नंदसिंह बेड़ ने लाडनूं, ओडिंट, कोयल, निंबी जोधा, डाबड़ी व कसूम्बी में सम्पर्क किया। इस सम्पर्क यात्रा में घंटियाल, कोयल व डीडवाना में एक-एक प्रा.प्र.शि. व कसुम्बी में एक मा.प्र.शि. का प्रस्ताव भी प्राप्त हुआ।

विजियासर (बनासकांठा) में स्नेहमिलन

बनासकांठा प्रांत के दांतीवाड़ा तहसील के रामनगर, भाखर, कोणोदर, धाड़ा, नादोत्रा, सुरजपुरा, निलपुर, वडवस, रोबस, किडोतर, भाखरी आदि गांवों का स्नेहमिलन 8 अप्रेल को विजियासर माताजी मंदिर में रखा गया जिसमें अजीतसिंह कुणघेर ने समाज के भूतकाल, वर्तमान एवं भविष्य की चर्चा करते हुए कहा कि संघ समाज रूपी शरीर की रीढ़ की हड्डी को मजबूत करने का काम कर रहा है। क्षत्रियत्व ही हमारे अस्तित्व का कारण है और उसी को संरक्षित कर पल्लवित करने का काम संघ कर रहा है। हम लोगों को संघ की प्रवृत्ति अपनाकर उस ओर बढ़ना होगा। संघ शक्ति व पथप्रेरक की तथा क्षत्रिय संघ शक्ति (गुजराती) की ग्राहक सदस्यता को लेकर भी चर्चा की गई।

मुंबई में सामूहिक शाखा

मुंबई प्रांत की भायंदर, मलाड, कांदिवली, कल्याण, ऐरोली, खारघर आदि शाखाओं ने 8 मार्च को चौपाटी में सामूहिक शाखा लगाई जिसमें 140 स्वयंसेवक शामिल हुए। शाखा में पूज्य तनसिंह जी द्वारा रचित सहगायन 'लो उतर पड़ी नैया' पर चर्चा करते हुए प्रांत प्रमुख नीरसिंह सिंघाणा ने कहा कि निरंतर साथ रहने वाले लोग ही नैया के खेवैया बनते हैं। यदि हम ऐसा करेंगे तो संघ हमारे जीवन की नैया को पार लगा देगा। शाखा में आगामी 23 से 26 अप्रेल तक चितहरणी (जालोर) में लगने वाले प्रा.प्र.शि. व बाड़मेर में लगने वाले उ.प्र.शि. को लेकर चर्चा की गई।

बावकान, बालोतरा एवं सिवाना में स्नेहमिलन

उच्च प्रशिक्षण शिविर की तैयारियों को लेकर चल रहे स्नेहमिलनों की श्रृंखला में शेरगढ़ प्रांत का बावकान तालाब सेतरावा, बालोतरा प्रांत का वीर दुर्गादास राजपूत छात्रावास बालोतरा एवं सिवाना प्रांत का कल्ला रायमलोत राजपूत बोर्डिंग सिवाना में 8 अप्रेल को स्नेहमिलन संपन्न हुआ। बावकान स्नेहमिलन में संभाग प्रमुख महेन्द्रसिंह गुजरावास सहित पूरे प्रांत के स्वयंसेवक शामिल हुए। सभी स्वयंसेवकों ने मंडल अनुसार चर्चा कर उच्च प्रशिक्षण शिविर में जाने वाले स्वयंसेवकों की सूचियां बनाई। आगामी शिक्षा सत्र में लगने वाले शिविरों के प्रस्तावों पर चर्चा की। संभाग प्रमुख ने सत्संगति के माध्यम से जीवन को संतुलित बनाने की बात कही। बालोतरा में संभाग प्रमुख मूलसिंह काठाड़ी के निर्देशन में हुए स्नेहमिलन में बायतु व बालोतरा प्रांत की शाखाओं की स्थिति पर चर्चा की गई। बंद शाखाओं को पुनः प्रारम्भ करने एवं नई शाखाएं शुरू करने के दायित्व लिए गए। उच्च प्रशिक्षण शिविर हेतु सूचियां तैयार की गई एवं संघशक्ति पथप्रेरक की ग्राहक सदस्यता को लेकर भी चर्चा की गई। उच्च प्रशिक्षण शिविर के बाद लगने वाले शिविरों के प्रस्तावों पर भी चर्चा हुई। सिवाना प्रांत के स्नेहमिलन में भी संभाग प्रमुख मूलसिंह काठाड़ी शामिल हुए एवं यहां भी उच्च प्रशिक्षण शिविर, संघशक्ति पथप्रेरक की ग्राहक सदस्यता एवं आगामी शिविरों के प्रस्तावों को लेकर चर्चा हुई।

बावकान

शेखावाटी में सम्पर्क व स्नेहमिलन

शेखावाटी संभाग में 1 अप्रेल को केन्द्रीय कार्यकारी गजेन्द्रसिंह आऊ के नेतृत्व में पालवास, दुजोद, सांगलिया व राजपूरा में युवाओं के स्नेहमिलन रखे गए। स्नेहमिलनों में युवाओं से संवाद कायम कर उन्हें श्री क्षत्रिय युवक संघ के महत्व के बारे में बताया गया। पूर्व में शिविर किए हुए स्वयंसेवकों को आगामी उच्च प्रशिक्षण शिविर में आने को प्रेरित किया गया वहीं उपस्थित युवाओं ने अपने-अपने गांव में साप्ताहिक शाखा लगाने का निश्चय किया। प्रांत प्रमुख जुगराजसिंह जुलियासर चारों स्थानों पर साथ रहे।

संपादकीय

प्रतिस्पर्धा की राजनीति का कटु सत्य

प्रायः राजनीतिज्ञों को लेकर हमारी यह शिकायत रहती है कि हमारे समाज के राजनीतिज्ञ एक होकर नहीं रहते। वे किसी एक के लिए सामूहिक प्रयास नहीं करते या एक-दूसरे से आगे निकलने का प्रयास करते रहते है। इस शिकायत से नकारा भी नहीं जा सकता क्योंकि वास्तव में ऐसा होता भी है। लेकिन राजनीति का वर्तमान स्वरूप देखें तो हमारी शिकायत का आवेग कुछ कम हो सकता है। वर्तमान राजनीति का ध्येय सत्ता है। वास्तव में तो देखा जाए तो बिरले ही लोग होते हैं जो सत्ता के लिए नहीं बल्कि सेवा के लिए राजनीति करते हैं और वर्तमान में तो यह प्रजाति लुप्त प्राय सी हो गई है। ऐसे में सत्ता प्राप्त करने की या सत्ता के निकट पहुंचने की गला काट प्रतिस्पर्धा वर्तमान राजनीति का कटु सत्य है। यह प्रतिस्पर्धा इतनी कुरूप हो गई है कि आडवाणी जी के राम रथ पर बैठकर राजनीति प्रारंभ करने वाले मोदी जी पूर्वोत्तर के एक राज्य में सरकार के शपथ ग्रहण समारोह में उन्हीं आडवाणी जी के अभिवादन तक की उपेक्षा कर देते हैं। इस प्रतिस्पर्धा में प्रारम्भ जहां राजनीतिक दलों से होता है वहीं आगे बढ़ते-बढ़ते यह व्यक्तिगत हो जाती है। राजनीतिक दल सत्ता के लिए राष्ट्र को भूलते है। राजनीतिक दलों में बने गुट अपने गुट के राजनीतिक हितों के लिए दल को भूलते है और जब बात व्यक्ति की आती है तो गुट भी सिमट कर व्यक्ति के हितों तक सीमित हो जाता है। यह आज की राजनीति का व्यवहारिक स्वरूप बन गया है। ऐसी प्रतिस्पर्धा केवल पार्टियों में ही नहीं है बल्कि उन सभी क्षेत्रों में है जो राजनीति में स्थान बनाने में सहयोगी हैं। चाहे वह क्षेत्र जाति हो या कोई भौगोलिक क्षेत्र हो, चाहे कोई अन्य हो। जैसे एक ही जिले के एक ही पार्टी के नेताओं के बीच यह प्रतिस्पर्धा होती है कि उनकी पार्टी में उस क्षेत्र का प्रतिनिधि किसे माना जाए। इसके लिए उनमें दांव पेंच चलते रहते है। ऐसी ही प्रतिस्पर्धा विभिन्न जातियों के नेताओं में भी पाई जाती है कि कौन उस जाति के कोटे से उनके राजनीतिक दल में प्रभावी बने। वर्तमान राजनीति के स्वरूप में ऐसा होना अस्वाभाविक भी नहीं है। इसलिए प्रथम दृष्टया तो हमारी यह शिकायत कमजोर हो जाती है कि सभी राजपूत नेता एक साथ क्यों नहीं चलते? क्यों नहीं वे एक के साथ होने वाली उपेक्षा में उसके साथ खड़े होते या क्यों नहीं वे एक-दूसरे को आगे बढ़ाने का प्रयास करते? ऐसा करना संभव नहीं लगता क्यों कि जो भी ऐसा करना चाहेगा उसे सदैव इस बात का खतरा बना रहता है कि कही यह मेरा स्थान नहीं ले लें। ऐसे में बाहर से चाहे कितना ही साथ होने का प्रयास करते दिखें, अंदर खाने वे सदैव इस असुरक्षा के भाव से घिरे रहते हैं। लेकिन ऐसे में क्या यह बात निरर्थक सिद्ध हो जाती है कि हमारे राजनेताओं को एक-दूसरे का सहयोग करना चाहिए या नए राजनेताओं को आगे बढ़ाने में सहयोग करना चाहिए। निश्चित रूप से निरर्थक नहीं है, ऐसा होना ही चाहिए लेकिन हम जो इस प्रकार की अपेक्षा करते हैं उनको वर्तमान राजनीति के इस कटु परन्तु व्यवहारिक पहलु का भी ध्यान रखना चाहिए। लेकिन जिस प्रकार राजनेता अपने व्यक्तिगत हितों से सामंजस्य बिठाकर राजनीतिक दलों में अपने गुट के हितों के प्रति क्रियाशील होते हैं या गुटों के हितों से सामंजस्य बिठाकर पूरे दल के हितों के प्रति क्रियाशील होते हैं वैसी अपेक्षा तो यहां भी की ही जानी चाहिए। समाज का कोई व्यक्ति नहीं चाहता कि वे अपने आपको मिटाकर समाज के साथ आ जाएं और यदि चाहता है तो वह बहुत ही अव्यवहारिक कल्पना लोक में जीता है लेकिन यह अपेक्षा तो करता ही है कि वे जहां तक सामंजस्य बिठाया जा सकता है, अवश्य बिठाएं। राजनीति में समाज की नई पौध, जिससे उनके व्यक्तिगत राजनीतिक कद को कोई खतरा नहीं है उसे आगे बढ़ाने का प्रयास करें। एक सामान्य राजपूत का समाज के प्रति जितना दायित्व बनता है उतना दायित्व तो उनका भी एक राजपूत के रूप में बनता ही है। साथ ही सभी राजनेताओं के आपसी हितों के बीच सामंजस्य बिठाकर उन्हें भी समाज का अंग मानते हुए उनकी स्थिति का सामाजिक हित में सर्वाधिक उपयोग करने के लिए एक नियामक सत्ता की समाज को आवश्यकता है और विगत वर्षों में इस प्रकार के अनेक सार्थक प्रयास हुए भी हैं लेकिन राजनीतिक लोग इस प्रकार के किसी भी नियमन को स्वीकार करना नहीं चाहते इसलिए स्थापित राजनेता ऐसे प्रयासों का प्रत्यक्ष या परोक्ष विरोध ही करते हैं लेकिन फिर भी समाज की शक्ति एवं चाह बड़ी है। यदि वह शक्ति एवं चाह प्रबल होगी तो राजनेताओं की व्यक्तिगत प्रतिस्पर्धा में सामंजस्य बिठाकर उसे समाज सापेक्ष बनाने के लिए प्रयास अवश्य सफल होगा।

प्रेरणादायी व्यक्तित्व मोहनसिंह सुल्ताना

जयपुर के चांद बिहारी नगर निवासी मोहनसिंह शेखावत (सुल्ताना) समाज के विवाह योग्य युवक-युवतियों के रिश्ते करवा कर समाज में अपना सहयोग दे रहे हैं। उन्होंने अभी तक दशकों रिश्ते करवाए हैं जिनमें एक दर्जन से अधिक बिना दहेज के विवाह हुए। वे इस बाबत दोनों परिवारों से मात्र एक ट्रोली चारे की गौशाला हेतु मांग करते हैं। वे अपनी प्रेरणा का स्त्रोत अपनी माताजी की इस सीख को मानते हैं कि पैसा कमाना बड़ी बात नहीं है बल्कि समाज में नाम कमाना बड़ी बात है। सेवानिवृत्ति के बाद वे इसी काम में लगे हैं एवं उनके पास सैंकड़ों युवक-युवतियों का बायोडाटा है। उनके मोबाइल नम्बर 9610755067 है।

गुमानसिंह गोरधनपुरा ने भूमि भेंट की

सीकर जिले की मदनी ग्राम पंचायत के गांव गोरधनपुरा के गुमानसिंह ने पशु चिकित्सालय के लिए जमीन भेंट की। गुमानसिंह ने लगभग 3 लाख रुपए की भूमि के कागजात पशु चिकित्सालय के नाम करवाए हैं।

खरी-खरी

रचनात्मकता के अभाव में मुद्दों की खोज

आज देश में विभिन्न राजनीतिक एवं सामाजिक नेताओं में मुद्दों की भूख पैदा हो गई है। सभी नेतागण इस बात का इंतजार करते हैं कि कब कहां कुछ नकारात्मक घटे और उनको अपनी विरोध के आधार पर चलने वाली नेतागिरी चमकाने का अवसर मिले। राजनीति में विपक्षी नेताओं और सामाजिक क्षेत्र में समाज के नेताओं का अस्तित्व ही अब नकारात्मक घटनाओं के आधार पर कायम रह पाता है। यदि वर्ष भर में कोई ऐसी नकारात्मक घटना नहीं हो तो ऐसे लोगों का जीवित रहना मुश्किल हो जाता है। सरकार और व्यवस्था का विरोध करने के लिए कोई मसाला नहीं मिले तो उनका स्वयं का बना रहना ही मुश्किल हो जाता है और ऐसे में वे सदैव इंतजार करते रहते हैं कि कब कोई अनहोनी घटे और वे अपने अस्तित्व को सिद्ध करें कि वे भी जिंदा हैं और समाज या राष्ट्र के लिए चिंतित हैं। राष्ट्र और समाज के लोग उन्हें भूले नहीं उनका अस्तित्व कायम है। एक वरिष्ठ राजनीतिज्ञ एवं समाजसेवी ने व्यक्तिगत बातचीत में इस विषय में बोलते हुए कहा कि ऐसे लोग उन गिद्धों की तरह होते हैं जो आकाश में सदैव इस आस के साथ उड़ान भरते रहते हैं कि कब कोई मृत जानवर दिखाई देवे और वे उसे अपना भोजन बनाकर जीवित रह सकें। यह स्थिति किसी भी राष्ट्र एवं समाज के लिए घातक होती है कि उसमें नेतृत्व करने वाले लोग केवल नकारात्मक मुद्दों की खोज में भटकते रहें। इस स्थिति का कारण मात्र यह है कि राजनेताओं एवं सामाजिक नेताओं के पास रचनात्मकता का अभाव है। उनके पास ऐसा कोई कार्यक्रम नहीं है जिसके बल पर वे समाज या राष्ट्र में कुछ निर्माण कर सकें। निर्माण का कोई खाका न होने के कारण वे सदैव विध्वंश की नकारात्मक शक्ति का सहारा लेते हैं। ताजा घटनाक्रम देखें तो उच्चतम न्यायालय ने हमारे सामाजिक ताने-बाने को तहस-नहस करने के लिए एक हथियार के रूप में प्रयोग किए जा रहे दलित उत्पीड़न निवारण अधिनियम के दुरुपयोग को रोकने के लिए कुछ प्रावधान बनाए लेकिन विपक्षी पार्टियों ने केवल सरकार विरोधी माहौल बनाने के लिए एवं दलित वोटों को अपनी ओर आकृष्ट करने के लिए इस निर्णय का आपराधिक विरोध किया। इसी प्रकार भावनगर में व्यक्तिगत रंजिश के कारण मारे गए दलित युवक को सामाजिक रूप देने का प्रयास किया। इसका सीधा सा कारण यह है कि इन विपक्षी नेताओं के पास तथाकथित दलित समाज को अपनी ओर आकृष्ट करने का कोई रचनात्मक कार्यक्रम नहीं है इसीलिए वे इस नकारात्मक बात का प्रचार कर अपनी रोटी सेकना चाहते हैं। ऐसा नहीं है कि वर्तमान विपक्ष ही ऐसा कर रहा है बल्कि वर्तमान सत्तासीन भी जब विपक्ष में थे तो ऐसा ही किया करते थे। ऐसा ही विभिन्न समाजों में काम करने वाले सामाजिक नेताओं या संगठनों के साथ भी है। ये सदैव इसी बात का इंतजार करते हैं कि कब उनके समाज के किसी व्यक्ति के साथ अन्य समाज द्वारा या व्यवस्था द्वारा कुछ गलत हो और उन्हें अपने अस्तित्व की सार्थकता सिद्ध करने का अवसर मिले। इस प्रकार ऐसे सभी लोगों की सार्थकता ही नकारात्मक मुद्दों पर आधारित हो गई क्योंकि कि इन सबके पास रचनात्मक कार्यों का अभाव है। विपक्षी दलों के पास सरकार का सार्थक सहयोग करने का कोई कार्यक्रम नहीं है और न ही सरकारें ऐसा चाहती हैं और उसी प्रकार सामाजिक नेताओं के पास भी समाज की सार्थक सेवा करने का कोई रचनात्मक कार्यक्रम नहीं है इसीलिए वे मुद्दों की खोज में भटकते रहते हैं। साथ ही समाज एवं राष्ट्र के आम लोगों की भी ऐसी प्रवृत्ति हो गई है कि उनकी नजर में वही हीरो होते हैं जो विरोध प्रबल तरीके से करते हैं। ऐसे नकारात्मक मुद्दों पर जो अति सक्रिय होते हैं उन्हें ही भावनात्मक ज्वार वश महिमा मंडित किया जाता है और ऐसा महिमा मंडन अन्य लोगों को भी इस नकारात्मक प्रवृत्ति की ओर आकर्षित करता है। ऐसे में राष्ट्र और समाज में रचनात्मक काम करने वाले या निर्माण का काम करने वाले सृजन का काम करने वाले लोगों को अपने उसी काम में मुस्तैदी से लगे रहने हेतु विशेष संघर्ष में प्रवृत होने की क्षमता की आवश्यकता होती है।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

शिविर सूचना

क्र.सं.	शिविर	समय	स्थान मार्ग आदि
1.	प्रा.प्र.शि.	20.04.2018 से 23.04.2018 तक	मेवाड़ क्षत्रिय महासभा भवन, **धरियावद** सम्पर्क सूत्र : 9414296746, 9413813601
2.	प्रा.प्र.शि.	23.04.2018 से 26.04.2018 तक	चितहरणी मंदिर, **रेवत,** जिला-जालोर। सम्पर्क : नारायणसिंह रेवत-9323481816 (यह शिविर मुंबई प्रांत द्वारा प्रवासी बंधुओं के लिए आयोजित है।)
3.	उ.प्र.शि.	11.05.2018 से 21.05.2018 तक	भारतीय ग्राम्य आलोकायन आश्रम, गेहूं रोड, **बाड़मेर**।
4.	विशेष शिविर	22.05.2018 से 25.05.2018 तक	भारतीय ग्राम्य आलोकायन आश्रम, गेहूं रोड, **बाड़मेर**।
5.	प्रा.प्र.शि.	26.05.2018 से 29.05.2018 तक	श्री लक्ष्मण राजपूत छात्रावास **डूंगरपुर**। सम्पर्क सूत्र : 9602554818
6.	मा.प्र.शि. (बालिका)	28.05.2018 से 03.06.2018 तक	दादावाड़ी धाम, **बरमसर** जिला- जैससमेर। जैसलमेर से बीकानेर वाया देवा, मोहनगढ़ वाली बसें बरमसर होकर जाती है।
7.	प्रा.प्र.शि.	30.05.2018 से 02.06.2018 तक	**लांबापारडा** (बांसवाड़ा)। सम्पर्क सूत्र : 9983565520, 9587968610
8.	प्रा.प्र.शि.	03.06.2018 से 06.06.2018 तक	**कुणी** (प्रतापगढ़), सम्पर्क सूत्र : 9928051478
9.	प्रा.प्र.शि.	07.06.2018 से 10.06.2018 तक	आंतरी माताजी, **आंतरी** जिला नीमच (म.प्र.)। सम्पर्क सूत्र : 7357179555
10.	प्रा.प्र.शि.	11.06.2018 से 14.06.2018 तक	**बस्सी** (चित्तौड़गढ़), सम्पर्क सूत्र : 7357179555
11.	प्रा.प्र.शि.	15.06.2018 से 18.06.2018 तक	**हल्दीघाटी** (राजसमंद)। सम्पर्क सूत्र : 9829081971

शिविर में आने वाले युवक काला नीकर, सफेद कमीज या टीशर्ट, काली जूती या जूता व युवतियां केसरिया सलवार कमीज, कपड़े के काले जूते, मौसम के अनुसार बिस्तर (एक परिवार से दो जने हों तो अलग-अलग), पेन, डायरी, टॉर्च, रस्सी, चाकू, सूई-डोरा, कंघा, लोटा, थाली, कटोरी, चम्मच, गिलास साथ लेकर आवें। संघ साहित्य के अलावा कोई पत्र-पत्रिका, पुस्तकें एवं बहुमूल्य वस्तुएं साथ ना लावें। उच्च प्रशिक्षण शिविर में आने वाले मेरी साधना पुस्तक साथ लेकर आवे।

राजेन्द्रसिंह बोबासर, शिविर कार्यालय प्रमुख

फौजियों का गांव गहमर

कर्नल हिम्मतसिंह पीह

उत्तर प्रदेश के गाजीपुर जिले का गहमर गांव एशिया के सबसे बड़े गांवों में से एक है। इसे फौजियों के गांव के नाम से जाना जाता है। इस गांव से 12 हजार फौजी वर्तमान में भारतीय सेना में कार्यरत हैं वहीं 15 हजार से अधिक भूतपूर्व सैनिक हैं। यहां हर परिवार का कोई न कोई सदस्य फौजी है।

बिहार एवं उत्तरप्रदेश की सीमा पर करीब 8 वर्ग मील में फैले इस गांव की आबादी 1 लाख 20 हजार के करीब है एवं पूरा गांव 22 पट्टी या टोले में बंटा हुआ है। गांव में सर्वाधिक जनसंख्या राजपूतों की है एवं लोगों की आय का मुख्य स्त्रोत नौकरी है। प्रथम व द्वितीय विश्व युद्ध के साथ-साथ आजादी के बाद हुए हर युद्ध में यहां के जांबाजों ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया है। विश्व युद्ध में यहां के 228 सैनिक शामिल हुए जिनमें से शहीद हुए 21 सैनिकों के नाम गांव के मध्य स्थित विद्यालय के मुख्य द्वार पर लगे शिलालेख पर अंकित हैं। गांव में स्थापित पूर्व सैनिक सेवा समिति के अध्यक्ष शिवानंद सिंह बताते हैं कि इस संस्था के 3 हजार सदस्य हैं एवं प्रति रविवार इसकी बैठक में गांव व सैनिकों की समस्याओं पर विचार किया जाता है। सेना में शामिल होने के इच्छुक युवकों को आवश्यक तैयारी में यह संस्था मदद करती है।

गांव के बाहर गंगा तट पर स्थित मठिया चौक में युवक सेना में शामिल होने की तैयारी करते हैं। 1986 तक सेना इसी गांव में भर्ती शिविर लगाया करती थी, अब भर्ती के लिए लखनऊ, रुड़की, सिकंदराबाद आदि जगह जाना पड़ता है। गांव में टेलीफोन एक्सचेंज, दो डिग्री कॉलेज, दो इंटर कॉलेज, दो उच्च माध्यमिक विद्यालय, दो माध्यमिक विद्यालय, पांच प्राथमिक विद्यालय, स्वास्थ्य केन्द्र आदि सभी सुविधाएं उपलब्ध हैं। फौजियों की जिंदगी से रचे बसे गांव की महिलाएं भी अपने परिवार के पुरुषों को सेना में जाने को प्रोत्साहित करती हैं। पर्व त्यौहार पर गहमर रेलवे स्टेशन पर रुकने वाली 11 गाड़ियों में फौजियों की आवाजाही देखकर स्टेशन सैन्य छावनी सा लगता है। गांव के निकट स्थित सेवराई यदि तहसील मुख्यालय बनता है तो गहमर दो या अधिक राजस्व गांवों में विभक्त हो सकता है।

भवप्रीता कंवर बनी बैंक पीओ

संघ के वयोवृद्ध स्वयंसेवक रतनसिंह नंगली की पौत्री व दीपेन्द्रसिंह की पुत्री भवप्रीता कंवर का आंध्रा बैंक में पीओ (स्केल वन ऑफिसर) के रूप में चयन हुआ है। वर्तमान में भवप्रीता पंजाब नेशनल बैंक में क्लर्क है।

फार्म-4 (नियम-8)

1. प्रकाशन स्थान	ए-8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर-302 012
2. प्रकाशन अवधि	पाक्षिक
3. मुद्रक का नाम	लक्ष्मणसिंह
नागरिकता	भारतीय
क्या विदेशी है	नहीं
पता	ए-8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर-302 012
4. प्रकाशक का नाम	लक्ष्मणसिंह
नागरिकता	भारतीय
क्या विदेशी है	नहीं
पता	ए-8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर-302 012
5. सम्पादक का नाम	लक्ष्मणसिंह
नागरिकता	भारतीय
क्या विदेशी है	नहीं
पता	ए-8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर
6. उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार व हिस्सेदार हों।	पूर्ण स्वामित्व-श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास ए-8, तारानगर,झोटवाड़ा, जयपुर

मैं एतद् द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सत्य हैं।

लक्ष्मणसिंह
प्रकाशक

01-04-2018

IAS/ RAS
तैयारी करने का राजस्थान का सर्वश्रेष्ठ संस्थान
स्प्रिंग बोर्ड
Spring Board
Springboard Academy, Main Riddi Siddi choraha,
Opposite Bank of Baroda, Gopalpura bypass Jaipur
website : www.springboardindia.org

अलख नयन मंदिर
नेत्र संस्थान
City Centre
अब आपकी सेवा में
आंखों से सम्बन्धित रोगों के निदान का विश्वसनीय केन्द्र
● केटरेक्ट एंड रिफ्रेक्टिव सर्जरी
● रेटिना
● ग्लूकोमा ● अल्प दृष्टि उपकरण
● भेंगापन
● कॉन्टेक्ट लेंस क्लिनिक
● कॉर्निया
● बाल नेत्र चिकित्सा
● आई बैंक व प्रत्यारोपण केन्द्र
सुपर स्पेशिलाइज्ड एवं अनुभवी नेत्र विशेषज्ञ
डॉ. एल.एस. झाला
डॉ. विनीत आर्य
डॉ. शिवानी चौहान
डॉ. साकेत आर्य
डॉ. नितिश खतुरिया
डॉ. गर्व बिश्नाई
● शिक्षण (PG Ophthalmology) व (Hands-on) प्रशिक्षण संस्थान
● निःशुल्क अति विशिष्ट नेत्र चिकित्सा (जरूरतमंद रोगियों के लिए फ्री आई केयर)

दुर्गा महिला विकास संस्थान की छात्राओं को मिला गार्गी पुरस्कार

सुश्री जय कंवर पुत्री
भंवरसिंह लोसल छोटी
जिला-सीकर
87 प्रतिशत।
कक्षा 10

सुश्री अनुकंवर पुत्री
स्व. आनन्दसिंह देवरी
जिला-नागौर
81.37 प्रतिशत।
कक्षा 10

सुश्री चिंकी कंवर पुत्री
सुरेन्द्रसिंह नृसिंहपुरी
जिला-सीकर
78.83 प्रतिशत।
कक्षा 10

सुश्री निशा कंवर पुत्री
भगवानसिंह आसरवा
जिला-नागौर
76.17 प्रतिशत
कक्षा 10

सुश्री सपना कंवर पुत्री
करणसिंह भगरासी
जिला-सीकर
75.67 प्रतिशत।
कक्षा 10

सुश्री सोनल कंवर पुत्री
नीरसिंह सिंगनोर
जिला-झुंझुनूं
86 प्रतिशत।
कक्षा 12 (कला)

सुश्री मोनूकंवर पुत्री
दुर्गासिंह बामणियां
जिला-चुरू
75.60 प्रतिशत।
कक्षा 12 (कला)

श्री चित्रांगदा कंवर
पुत्री महादेवसिंह
दांतली
85.80 प्रतिशत।
कक्षा 12 (विज्ञान)

श्री क्षत्रिय युवक संघ द्वारा संचालित संस्थान के छात्रावास में अध्ययनरत आठ छात्राओं को गार्गी पुरस्कार प्राप्त हुआ है। सभी बालिकाएं मध्यम वर्गीय परिवारों से संबंधित हैं।

प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर संपन्न

उदयपुर में देबारी पिण्डवाड़ा मार्ग पर स्थित लाव लश्कर कृषि फार्म पर 29 मार्च से 1 अप्रेल 2018 तक संघ का प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर संपन्न हुआ। शिविर का संचालन संभाग प्रमुख भंवरसिंह बेमला ने सुरेन्द्रसिंह रोलसाहबसर, भगतसिंह बेमला, हनुवंतसिंह सज्जसिंह का गड़ा, गोपालशरणसिंह सहारड़ा, फतेहसिंह भटवाड़ा आदि के सहयोग से किया। शिविर में उदयपुर के आसपास से 50 स्वयंसेवक प्रशिक्षणार्थ पहुंचे। शिविर में आए उत्तरदायी स्वयंसेवकों ने बैठक कर आगामी उप्रशि एवं जून माह में आयोजित प्रा.प्र.प्र. शिविरों की योजना बनाई।

क्षत्रिय सेवा समिति का गठन

नागौर जिले के निंबी जोधा गांव के समाज बंधुओं द्वारा बैठक कर क्षत्रिय सेवा समिति निंबी जोधा का गठन किया गया। प्रतापसिंह कोयल के संरक्षकत्व में एक कार्यकारिणी का गठन किया गया। कार्यकारिणी की प्रथम बैठक में समाज के श्मशान घाट पर चबूतरा व टीनशैड बनवाने, गांव में राजपूत सभा भवन बनवाने, गणगौर की सवारी भव्य रूप से निकालने आदि विषयों पर चर्चा की गई। प्रतापसिंह कोयल ने इस अवसर पर श्मशान घाट का चबूतरा व टीनशैड बनाने की जिम्मेदारी ली।

कुलदीपसिंह बने बडोड़ागांव के प्रथम डॉक्टर

डॉ. कुलदीपसिंह भाटी जैसलमेर जिले के बडोड़ागांव के पहले डॉक्टर बने हैं। उन्होंने हाल ही में राजकीय संपूर्णानंद मेडिकल कॉलेज जोधपुर से एमबीबीएस पूर्ण कर डिग्री ली है।

सुमेरसिंह लोड़ता को पितृशोक

संघ के स्वयंसेवक सुमेरसिंह लोड़ता के पिता मोड़सिंह राठौड़ का 4 अप्रेल को देहान्त हो गया। पथप्रेरक परिवार शोक संतप्त परिवार के प्रति अपनी हार्दिक संवेदना व्यक्त करता है।

भजन किसका करें? - 3

महाकुम्भ के अवसर पर चण्डीद्वीप (हरिद्वार) में दिनांक 10.04.1983 ई. की जनसभा में परमपूज्य स्वामी श्री अड़गड़ानन्दजी का प्रवचन। 'भजन किसका करें' नामक छोटी सी पुस्तक में संग्रहित है। उसी पुस्तक को धारावाहिक रूप से यहां छापा जा रहा है। प्रस्तुत है गतांक से आगे का भाग।

(क)

हम देवता परम अधिकारी।
विषय वस्य प्रभु भगति बिसारी।।
(6/109/11)

हम देवता लोग परम अधिकारी थे, लेकिन विषयों के वश में होकर आपकी भक्ति को भूल गए। 'हम देवता परम दुख पायो।' एक होता है दुःख और एक परम दुःख। उस परम दुःख से देवता भी आक्रान्त हैं। देवता भी विषयों के वश में हैं। यदि आप उनकी सेवा करते हैं तो विषयों की सेवा करते हैं।

(ख)

विधि प्रपंच गुन अवगुन साना। (1/5/6)
दानव देव ऊंच अरु नीचू।
अमिय सुजीवन माहुरु मीचू।। (1/5/6)
सरग-नरक अनुराग-विरागा।
निगमागम गुन-दोष विभागा।। (1/5/9)

अर्थात् विधाता का प्रपंच गुण और अवगुणों से सना है। प्रपंच क्या है? पाप और पुण्य, सुजाति और कुजाति, सुन्दर जीवन अमृत और जहरीला जीवन मृत्यु, स्वर्ग और नरक - यही सब विधाता का प्रपंच है। स्वर्ग और स्वर्ग निवासी देवता प्रपंच हैं। शास्त्रों में आप्तकाम महापुरुषों ने इसी का विभाजन किया था। यदि आप देवताओं की पूजा करते हैं तो प्रपंच की पूजा कर रहे हैं। यह इसी संसार के गुण-दोषों का चित्रण मात्र है। संसार से अलग न कोई देवता है न स्वर्ग।

(ग)

गरुड़ को मोह हो गया। वे ब्रह्मा के पास गए। ब्रह्मा ने मन में विचार किया कि गरुड़ को तो मैंने बनाया। भगवान की माया ने जब स्वयं मुझ तक को अनेकों बार नचाया, तब पक्षीराज को मोह होना कोई आश्चर्य की बात नहीं है - **'विपुल बार जेहिं मोह नचावा।'** (7/59/4) देवताओं के पितामह ब्रह्मा जी जहां नाच रहे हैं तो देवता आपको माया से बचा लेंगे?

सोई प्रभु भ्रू विलास खगराजा।
नाच नटी इव सहित समाजा।।
(7/71, ख/2)

वही माया भगवान के संकेत मात्र से नटी की तरह नाचती है। माया से विवश होकर नाचने वालों की आप पूजा करते हैं। जब करना है तो उसकी पूजा करें, जिसके संकेत पर स्वयं माया नाचती है। गरुड़ जी कहते हैं - वह माया रघुवीर की दासी है और वह राम की कृपा के बिना छूटती ही नहीं है, यह मैं प्रतिज्ञापूर्वक कह रहा हूं। अतः उन एक परमात्मा का भजन करें जो मायाधीश हैं, जिसके लिए मानस में बारम्बार संकेत किया गया है।

(घ)

अग-जग जीव नाग नर देवा।
नाथ सकल जग काल कलेवा।।

देवता, मनुष्यादि चराचर जगत् काल का कलेवा है। देवता भी काल का कलेवा है, जलपान की सामग्री है। आप कलेवा का भजन क्यों करते हैं? **'भजसि न मन तेहिं राम कहं, काल जासु को दण्ड।', 'भुवनेश्वर कालहु कर काला।'** काल के भी काल, जगत् के स्वामी भगवान राम का भजन क्यों नहीं करते? जो स्वयं मरणधर्मा है, वह आपको मृत्यु दे सकता है, मृत्यु से बचा नहीं सकता।

(ङ)

देवता आपके मनोगत भाव भी जानने में सक्षम नहीं हैं। देवर्षि नारद हिमालय की गुफा में तपस्यारत थे। देवताओं के राजा इन्द्र को लगा कि नारद जी तपस्या करके उनका पद (इन्द्र पद) लेना चाहते हैं। देवताओं के राजा को इतना भी नहीं मालुम कि नारद किसलिए भजन कर रहे हैं? क्या वे आपकी मनोकामना पूरा करेंगे?

(च)

भगवत्-पथ में यदि कोई रुकावट है तो देवता हैं। नारद ही नहीं, जो भी भजन में अग्रसर हुआ, देवताओं ने उसे गिराने का भरपूर प्रयास किया। सामान्य मानव को भी वे इस पथ पर जाने नहीं देते -

इन्द्री द्वार झरोखा नाना।
तहं-तहं सुर बैठे करि थाना।।
आवत देखहिं विषय बयारी।
ते हठि देहिं कपाट उघारी।।

इन्द्रियों के द्वार हृदयरूपी घर के अनेकों वातायन हैं। प्रत्येक झरोखों पर देवता अड्डा जमाकर बैठे हैं। ज्योंही विषयरूपी हवा को आते देखते हैं त्योंही वे देवता हठपूर्वक किवाड़ खोल देते हैं। व्यक्ति विषयों में उलझ जाता है। इन्द्रियों और उनके देवताओं को ज्ञान अच्छा नहीं लगता। इन्हीं से तो आपको लड़ना है। ये विकार है, अवरोध हैं। यदि इन्हें पूजते हैं तो आप विकार पूज रहे हैं, अवरोध पूज रहे हैं। अवरोधों को तो हटाना चाहिए न।

विषय करन सुर जीव समेता।
सकल एक से एक सचेता।।
सबकर परम प्रकासक जोई।
राम अनादि अवधपति सोई।। (1/116/5-6)

विषय, इन्द्रियां, उनके देवता और जीवात्मा - ये सब (अवरोही क्रम से) एक की सहायता से एक क्रियाशील होते हैं और इन सबके ऊपर जो परम प्रकाशक है वही अनादि अवधपति राम हैं। देवता भी जिसका प्रकाश लेकर प्रकाशित होते हैं, उस मूल परमात्मा का आप चिन्तन करें।

(छ)

देवता त्रिकालज्ञ भी नहीं हैं। राम-रावण युद्ध का सन्दर्भ है। भयंकर युद्ध चल रहा था, रावण मरने ही वाला था। देवता भी इस युद्ध को देख रहे थे। वे किसी का पक्ष नहीं ले रहे थे। वे **'विकल बोलहि जय जये'** - 'जय हो, जय हो' की ध्वनि कर रहे थे। पता नहीं कौन जीते? राम की जय - ऐसा कहने में खतरा था। राम की विजय निश्चितप्रायः हो जाने पर ही युद्ध के अन्तिम दिनों में देवराज ने अपना रथ सहायता में भेजा और रावण के मरत ही 'सदा स्वार्थी' देवता पहुंच गए, उनके पितामह तक चले आए। कहने लगे :

कृतकृत्य विभो सब वानर ए।
निरखंति तवानन सादर ए।।
धिक जीवन देव सरीर हरे।
तव भक्ति बिना भव भूलि परे।। (6/110 छन्द)

प्रभो। ये वानर कृतकृत्य हैं जो आपके मुखारविन्द का दर्शन कर रहे हैं। हम देवताओं के शरीर को धिक्कार है जो आपकी भक्ति के बिना भव में भूले पड़े हैं। जो स्वयं रास्ता भूल गया है, क्या वह आपको रास्ता बताएंगे? देवताओं ने कहा -

'भव प्रवाह संतत हम परे।
अब प्रभु पाहि सरन अनुसरे।' (6/109/12)

जो स्वयं बह रहा है वह आपको क्या पार उतारेगा? (वह जानता तो खुद न पार उतर जाता?) जो स्वयं भव-प्रवाह से अपने को बचाने के लिए त्राहि-त्राहि कर रहा है कि हमें पार कर दो, वह आपको क्या पार करेगा? वह आपके ऊपर चढ़ बैठेगा और कदाचित् पार भी हो जाए, किन्तु आप किस घाट लगेंगे? अतः देवता भी जिनसे शरण मांगते हैं आप सीधे उन्हीं भगवान को पकड़ें। जो देतवा स्वयं अपनी विपत्ति में फंसा है वह आपकी कौन-सी सहायता करेगा? **(क्रमशः)**

(पृष्ठ दो का शेष) जीवनोपयोगी...

(2) व्यवसाय प्रबंधन (Business Management) : इसके अन्तर्गत 12वीं कक्षा के पश्चात् निम्नलिखित स्नातक डिग्रीयां उपलब्ध हैं :

(1.) बी.बी.ए. - बैचलर इन बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन।
(2) बी.एम.एस. - बैचलर इन मैनेजमेंट स्टडीज।
(3) बी.बी.एस. - बैचलर इन बिजनेस स्टडीज।
(4) बी.बी.एम - बैचलर इन बिजनेस मैनेजमेंट।

उपरोक्त डिग्रियों हेतु विभिन्न संस्थान अपने स्तर पर प्रवेश परीक्षा आयोजित करते हैं। ऑल इंडिया मैनेजमेंट एसोसिएशन द्वारा बी.बी.ए. में प्रवेश हेतु राष्ट्रीय स्तर पर AIMA-UGAT परीक्षा का आयोजन किया जाता है। स्नातक डिग्री प्राप्त करने के पश्चात् इनमें दो वर्षीय स्नातकोत्तर कोर्स का भी विकल्प उपलब्ध रहता है। विभिन्न कम्पनियों में एग्जीक्युटीव, मैनेजर, प्रशासक, मार्केटिंग सलाहकार, इवेन्ट मैनेजर आदि पदों के साथ ही स्वयं का व्यवसाय - संचालन हेतु भी यह डिग्रियां सफलता के द्वार खोलने में सक्षम हैं।

(3) होटल मैनेजमेंट : इसके अन्तर्गत विभिन्न संस्थानों में तीन अथवा चार वर्षीय कोर्स उपलब्ध करवाए जाते हैं, जो होटल मैनेजमेंट के विभिन्न पदों पर नियुक्ति दिलाने में सहायक सिद्ध होते हैं।

(4) जन-संचार (Mass Communication) : पत्रकारिता एवं लेखन के क्षेत्र में कॅरियर निर्माण के लिए यह कोर्स उपयुक्त है। इसके अन्तर्गत निम्न विकल्प उपलब्ध हैं :

(1) बैचलर इन मास मीडिया।
(2) बैचलर इन मास कम्युनिकेशन।
(3) बैचलर इन मीडिया स्टडीज।
(4) बैचलर इन जर्नलिज्म एण्ड मास कम्युनिकेशन।
(5) बैचलर इन जर्नलिज्म/कम्युनिकेशन एण्ड मीडिया।

उपरोक्त कोर्सेस में बारहवीं कक्षा के प्राप्तांकों के आधार पर प्रवेश मिलता है।

इनके अतिरिक्त कम्प्यूटर एप्लीकेशन्स, लिबरल आर्ट्स तथा फाइन आर्ट्स, समाज-कार्य, खेलकूद एवं शारीरिक शिक्षा, संगीत, अभिनय, गायन आदि ऐसे क्षेत्र हैं जो सभी विषय वर्ग के विद्यार्थियों हेतु उपलब्ध रहते हैं।

(पृष्ठ चार का शेष) रचनात्मक...

उन्हें अपने आपसे इस बात के लिए संघर्ष करना पड़ता है कि कहीं मुझे अस्वीकार तो नहीं किया जा रहा है, कहीं मैं गुमनामी में तो नहीं खो जाऊंगा और साथ ही अपने आसपास के लोगों को भी इस बात को समझाने के लिए संघर्ष करना पड़ता है कि वह जिस निर्माण के काम में लगा है, सृजन के काम में लगा है वह समाज एवं राष्ट्र के भविष्य के लिए कितना आवश्यक है। ऐसे में जो लोग भगवान कृष्ण के कर्मयोग के सिद्धान्त से अपरीचित होते हैं, जिनका जीवन उस प्रकाश से आलोकित नहीं होता वे जमाने के प्रवाह में बह जाया करते हैं और जिनके जीवन की दिशा इससे निर्धारित होती है वे संन्यासी की भांति अपने काम में संलग्न रहते हैं। इसीलिए आएं गीता की ओर चलें।

जाझा करूं जुहार

पत राखण पैलाद री, अनुठो ले अवतार।
हिरणाकुश ने मारियो, जाझा करूं जुहार।।1।।
वांकल मात विरातरे, परचा देय अपार।
जोतां वाळी मात ने, जाझा करूं जुहार।।2।।
प्रथमी जस पसारियो, जगमाले परमार।
ऐड़ा नर भल अवतरे, जाझा करुं जुहार।।3।।
कीरत रंग केसरियो, सगती को आधार।
रजपूती रखवाण नै, जाझा करूं जुहार।।4।।
समर साथी चेतकड़ो, राणे को गळहार।
अमर हुओ इण देस में, जाझा करुं जुहार।।5।।
गांडीव चाले जोरको, करै कौरू संहार।
पांडू थारे पूत ने, जांझा करूं जुहार।।6।।
गायो घेर'र लावियो, हो घोड़े असवार।
रंग पाबू राठोड़ ने, जाझा करूं जुहार।।7।।
राकस भैरू मारियो, भूमि घटायो भार।
अजमल घर अवतार न, जाझा करूं जुहार।।8।।

-मानसिंह भुरटिया

(पृष्ठ एक का शेष)

पहले शस्त्र...

जैसे समुद्र पार जाने को गैर धार्मिक घोषित कर दिया गया जिसके परिणामस्वरूप भारत की समुद्री शक्ति विकसित ही नहीं हो पाई और समुद्र में शाक्तिशाली लोगों का भारत गुलाम बन गया। सभी राज्यों की अलग-अलग देवियां व देवता बना दिए गए और उससे विभाजन बढ़ा जबकि पूजनीय केवल एक परमेश्वर है।

स्वामीजी ने एक भजन के माध्यम से बताया कि सद्गुरु की सम्पूर्ण कृपा से उनकी आज्ञा अनुसार अभ्यास करने पर व्यक्ति संसार के क्षेत्राधिकारी से परमेश्वर के क्षेत्राधिकार में आ जाता है जहां माया की पहुंच नहीं है। दैवी संपदा ही असली संपदा है इसीलिए समस्त लोकों के स्वामी मनु महाराज ने तपस्या के फलस्वरूप परमेश्वर के दर्शन के समय स्वयं को दरिद्र बताया। हृदय में परमात्मा का देवत्व ही असली सम्पदा है। स्वामीजी ने बताया कि सद्गुरु सबके हृदय की बात जानते हैं इसलिए उनके सदैव निकट रहने वाले एवं दूर रहने वाले के प्रति उसकी श्रद्धा एवं लगन के अनुरूप ही व्यवहार करते हैं। भगवान बुद्ध के सदैव साथ रहने वाले आनंद भी उनके महाप्रयाण के बाद चार दिन लगातार ध्यान होने पर ही कैवल्य प्राप्त कर पाए जबकि बुद्ध के समय उनसे दूर रहने वाले शिष्यों को भी यह कृपा प्रसाद मिला। बाड़मेर के बाद स्वामी जी 10 अप्रेल को जसोल स्थित राणी रुपादे के पाळिया पधारे एवं वहां प्रवचन किया। साथ ही जसोल स्थित राणी भटियाणी मंदिर भी पधारे एवं प्रवचन किया। वहां से जोधपुर पधारे एवं अपने एक भक्त के यहां थोड़ा विश्राम किया। जोधपुर में अपने अल्प प्रवास के दौरान भी स्वामीजी ने आए हुए श्रद्धालुओं को प्रवचन करते हुए कहा कि निर्बल के बल राम होते हैं। उन्होंने 'निर्बल के बल राम' भजन के माध्यम से समझाया कि द्रोपदी जब तक अपने नाते रिश्तेदारों एवं स्वयं के बल पर प्रयास करती रही तब तक भगवान की सहायता नहीं मिली लेकिन ज्यों ही असहाय होकर पुकारा भगवान वस्त्र के रूप में सहायक बनकर आए। गजराज ने अपने बल का आसरा छोड़कर पूर्ण समर्पण के साथ परमेश्वर को पुकारा तो भगवान ने मगर से मुक्त करवाया। इसलिए धनबल, बाहुबल, बुद्धिबल, तपबल सभी को छोड़कर निर्बल बन परमेश्वर को पुकारने पर वे सदैव सहायक बन खड़े रहते हैं। ऐसे ही पूर्ण समर्पण को प्राप्त होने की विधि गीता है जिसकी शाश्वत व्याख्या यर्थाथ गीता की चार आवृत्ति के बाद अभ्यास करने पर विधि जागृत हो जाती है। जोधपुर से स्वामीजी श्री बालाजी स्थित परमहंस आश्रम पधारे। माननीय संघ प्रमुख श्री अपने साथी स्वयंसेवकों सहित पूरे प्रवास के दौरान स्वामीजी के साथ रहे।

क्षत्रिय धर्म...

उन्होंने कहा कि आज का सम्मेलन पूरी राजपूत जाति को एक करने के लिए बुलाया है जो एक श्रेष्ठ प्रयास है लेकिन गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने कहा है कि दैवी एवं आसूरी प्रवृत्ति एक नहीं हो सकती लेकिन फिर भी उन्होंने महाभारत में अंतिम समय तक कौरवों को समझाने का प्रयास किया। भगवान कृष्ण के अन्तिम समय में उनके सारथी दारूक ने उनसे पूछा कि जब आप अवतार लेकर भी संसार में पूर्ण रूपेण धर्म की स्थापना नहीं कर पाए तो हमें क्या करना चाहिए। ऐसे में भगवान श्रीकृष्ण का जवाब था कि जो मैंने किया वहीं तुम करो। अर्थात श्रेष्ठ लोगों को अपने प्रयास अंतिम समय तक जारी रखने चाहिए। उन्होंने धर्म संसद के गठन को लेकर कहा कि वे स्वयं या उनका कोई सहयोगी इसमें कोई पद नहीं लेंगे और ना ही नेतृत्व करेंगे लेकिन यह धर्म संसद जो भी श्रेष्ठ कार्य करेगी उसमें पूरा सहयोग देंगे। सभी संस्थाओं के पदाधिकारियों ने अपनी बात कही। उसके बाद डॉ. जयेन्द्रसिंह जाड़ेजा की अध्यक्षता में क्षत्रिय धर्म संसद का गठन किया गया एवं मैनपालसिंह राघव को उपाध्यक्ष निर्वाचित किया गया। सम्मेलन में तय किया गया कि 400 लोकसभा क्षेत्रों से एक-एक प्रतिनिधि इसमें शामिल होगा एवं 500 के लगभग सामाजिक संगठनों को इसमें शामिल किया जाएगा। यह धर्म संसद आरक्षण सहित अन्य सभी सामाजिक मुद्दों पर काम करेगी।

महाराव...

इसमें संस्थान के सदस्यों के अतिरिक्त शेखावाटी की प्रत्येक तहसील से मुख्य लोग आमंत्रित थे। जयपुर में निवास करने वाले प्रमुख शेखावतों को भी आमंत्रित किया गया था। अमरसर गांव में से, जहां एक भी राजपूत का घर नहीं है, भी 50-60 व्यक्ति कार्यक्रम में सम्मिलित हुए। श्री क्षत्रिय युवक संघ के संघ प्रमुख माननीय भगवानसिंह व महावीर सरवड़ी भी आमंत्रित थे। राव राजेन्द्रसिंह शाहपुरा जो संस्थान के अध्यक्ष हैं, के अतिरिक्त मंत्री राजेन्द्रसिंह राठौड़, गजेन्द्रसिंह खींवसर, राजपालसिंह शेखावत, प्रेमसिंह बाजोर व औंकारसिंह लखावत भी उपस्थित थे। संस्थान के कार्यकारी अध्यक्ष जालिमसिंह आसपुरा अस्वस्थ होते हुए भी कार्यक्रम में पहुंचे। शेखावाटी के पूर्व ठिकानों के ठिकानेदार भी सम्मिलित हुए।

दुर्गासिंह मण्डावा ने महाराव शेखाजी के जीवन पर प्रकाश डाला। औंकारसिंह लाखावत ने राजपूत इतिहास की अद्भुतता का वर्णन करते हुए महापुरुषों की धरोहरों के संरक्षण हेतु किए गए कार्यों का वर्णन किया। मुख्यमंत्री ने प्रेरणादायी इतिहास के संरक्षण की आवश्यकता जताई ताकि उनके कार्यों से वर्तमान पीढ़ी प्रेरणा ले सके। साथ ही नया इतिहास रचने की आवश्यकता दर्शाते हुए उसके अनुकूल जीवन में सक्रियता अपनाने को कहा। संस्थान के अध्यक्ष ने मुख्यमंत्री का आभार प्रकट करते हुए सभी को सहयोग के लिए धन्यवाद दिया। वीरो, महापुरुषों, भक्तों, लोक देवताओं, पुण्यात्माओं के स्मारकों पर संरक्षण कार्य किया गया है। कुछ पर पूरा हो गया, कुछ पर अगले 2-3 माह में पूरा हो जाएगा तो कुछ पर काम शुरू हो रहा है।

राजस्थान धरोहर संरक्षण एवं प्रोन्नति प्राधिकरण के अध्यक्ष औंकारसिंह लखावत ने बताया कि सरकार ने महाराणा सांगा के नाम से खानवा, अमरसिंह राठौड़ के नाम से नागौर, गोगाजी के नाम से गोगामेड़ी, मीराबाई के नाम से मेड़ता सिटी, हाडी रानी के नाम से सलुंबर, करणी माता के नाम से देशनोक, बाबा रामदेव के नाम से रामदेवरा, आऊवा के सेनानियों के नाम से आऊवा, पीपाजी के नाम से गागरोन, पाबूजी के नाम से कोलू, बप्पा रावल के नाम से मठाठा (उदयपुर), महाराणा राजसिंह के नाम से राजसमंद, तनोट माता के जन्म स्थान चालकना(बाड़मेर), राजा भृतहरी के नाम से अलवर, महाराणा कुंभा के नाम से माल्यावास (मदारिया), राजा मुचुकुन्द के नाम से धौलपुर, वार मेमोरियल झुंझनूं, जाम्भेश्वर पेनोरमा पीपासर, तेजाजी पेनोरमा खराल, पन्नाधाय पैनोरमा कमेरी सहित विभिन्न जाति समुदायों के वीरो, संतों, स्वतंत्रता सेनानियों, समाज सुधारकों के नाम से 44 पेनोरमा या स्मृति स्थल विकसित किए जा रहे हैं।

व्यक्तित्व को निखारने का माध्यम है शिक्षा

शिक्षा व्यक्ति के व्यक्तित्व को निखारने का माध्यम है। शिक्षा उसे सामाजिक, सांस्कृतिक एवं मनोवैज्ञानिक रूप से परिस्कृत करती है। व्यक्ति की नैसर्गिक क्षमताओं को प्रकट कर उनका परिमार्जन करती है। वर्तमान में शिक्षा को केवल रोजगार प्राप्ति से जोड़ दिया गया है जो अधूरा सत्य है। शिक्षा व्यक्ति के सर्वांगीण विकास के लिए है। बाड़मेर की गांधीनगर कॉलोनी में एटलस ग्लोबल एकेडमी के शुभारम्भ के अवसर पर 2 अप्रेल को माननीय संघ प्रमुख श्री ने उपर्युक्त बात कही। उन्होंने कहा कि अंग्रेजी भाषा आज वैश्विक सम्पर्क की भाषा बन गई है इसलिए इसके अध्ययन पर सर्वत्र बल दिया जा रहा है ऐसे में अंग्रेजी माध्यम का यह विद्यालय भी इस बाबत उपयोगी सिद्ध होगा ऐसी मेरी शुभकामनाएं है। उन्होंने कहा कि आध्यात्मिकता से दूरी बनाने के कारण आज शिक्षा का रूप भी विकृत हुआ है और उसका परिणाम संसार में प्रकट हो रहा है। इसलिए शिक्षण में इसका आलोक होना आवश्यक है। संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक एवं शिक्षाविद् कमलसिंह चूली ने अपने उद्बोधन में कहा कि शिक्षक एवं शिक्षार्थी के बीच बेहतर संप्रेषण हेतु सेतु बनाने के लिए शिक्षण में आवश्यक नवाचारों को शामिल किया जाना चाहिए। उन्होंने गांधीनगर कॉलोनी में अंग्रेजी माध्यम का विद्यालय खुलने पर प्रसन्नता व्यक्त की। अतिरिक्त जिला शिक्षा अधिकारी (प्रा.शि.) बाड़मेर कृष्णसिंह राणीगांव ने शिक्षा जगत के स्वरूप एवं समस्याओं से अवगत करवाते हुए विद्यालय परिवार को अपनी शुभकामनाएं प्रेषित की। विद्यालय के निदेशक युवराजसिंह जानसिंह की बेरी ने विद्यालय का परिचय, विशेषताओं एवं भविष्य की रूपरेखा की जानकारी दी। संस्था के अध्यक्ष मंगरसिंह खारा ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया।

बाड़मेर में बी.एस.टी.सी. हेतु टेस्ट सीरीज

संघ के कर्मचारी प्रकोष्ठ की बाड़मेर इकाई द्वारा बी.एस.टी.सी. परीक्षा की तैयारी हेतु टेस्ट सीरीज प्रारम्भ की है। पूर्व में रीट व कांस्टेबल परीक्षा के लिए भी इसी प्रकार की टेस्ट सीरीज आयोजित हुई थी। 1 अप्रेल रविवार से शुरू हुई सीरीज में प्रत्येक रविवार को बी.एस.टी.सी. की तैयारी कर रहे समाज बंधुओं का टेस्ट लिया जाएगा एवं उनको अपनी तैयारी का मूल्यांकन करने का अवसर प्रदान किया जाएगा।

सेना में लिखित परीक्षा हेतु निःशुल्क कोचिंग

भारतीय सेना में भर्ती हेतु आयोज्य लिखित परीक्षा की तैयारी हेतु मंगल बाल निकेतन बेलवा (जोधपुर) में कर्नल नारायणसिंह बेलवा के निर्देशन में निःशुल्क कोचिंग कक्षाएं 13 अप्रेल को संघ के कर्मचारी प्रकोष्ठ के तत्वावधान में शुरू हुई। इसमें अभ्यार्थियों को गणित, अंग्रेजी, सामान्य ज्ञान, विज्ञान, समसामयिक जानकारी आदि विषयों की निःशुल्क कोचिंग दी जाएगी।

कृषि अधिकारी के रूप में चयनित

मनोहर सिंह पुत्र अभयसिंह सोलंकी निवासी सेउवा का ओरियंटल बैंक ऑफ कॉमर्स में कृषि अधिकारी के रूप में चयन हुआ है। मनोहरसिंह ने कृषि विज्ञान में एम.एस.सी. किया है।

गुड़ा चतुरा में पाटोत्सव

पाली जिले के बगड़ी नगर के निकट गुड़ा चतुरा गांव में नागणेच्या माता मंदिर का 18वां पाटोत्सव कार्यक्रम 29 मार्च को संपन्न हुआ। कार्यक्रम में भाजपा जिला उपाध्यक्ष गिरवरसिंह राठौड़, नारायण सिंह आकड़ावास, अभयसिंह पाली, घीसूसिंह सारंगवास आदि ने सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ अभियान चलाने की आवश्यकता जताई। नागणेच्या माता विकास समिति के अध्यक्ष सवाईसिंह गुड़ा रामसिंह के अनुसार कार्यक्रम में युवाओं को प्रेरित करने के लिए प्रतिभावान छात्रों को बहुमान किया गया।

कैप्टन का बहुमान

मारवाड़ अलंकरण पुरस्कार के सम्मानित गुड़ाश्यामा निवासी कैप्टन जोधसिंह का स्थानीय समाज बंधुओं द्वारा सम्मान किया गया। उल्लेखनीय है कि कैप्टन जोधसिंह द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान अनेक देशों में युद्ध अभियान का हिस्सा रहे थे।

नवरात्रि में सम्पर्क यात्रा व यज्ञ

संघ के झालावाड (गुजरात) प्रांत के स्वयंसेवकों ने 18 मार्च से 26 मार्च तक प्रांत के विभिन्न गांवों में सम्पर्क यात्रा का आयोजन किया। एक दल ने वरिष्ठ स्वंयसेवक राजेन्द्रसिंह घणाद के नेतृत्व में सुरेन्द्रनगर जिले की लखतर एवं बढ़वान तहसील के 14 गांवों में सम्पर्क कर संघ का परिचय दिया, संघ साहित्य को लोगों तक पहुंचाया एवं यज्ञों का आयोजन किया। दूसरे दल ने वयोवृद्ध स्वयंसेवक अजीतसिंह धोलेरा के नेतृत्व में सुरेन्द्रनगर शहर में राजपूतों के घर यज्ञ किया एवं संघ का परिचय दिया। दोनों ही दलों ने यज्ञ के साथ-साथ मंत्रों का समझ, 16 संस्कार, संस्कारों में आई विकृतियों, गीता, नारी धर्म आदि विषयों पर भी चर्चा की। रामनवमी के दिन यज्ञ के उपरान्त श्रीराम एवं श्री हनुमान के चरित्र पर माननीय अजीतसिंह ने व्याख्यान दिया। दोनों दलों में स्थानीय स्वयंसेवकों ने सहयोगी के रूप में बढ़-चढ़कर कर भाग लिया।

राजा रघुनाथसिंह जी की जयंती मनाई

नागौर जिले के मारोठ कस्बे में राजा रघुनाथसिंह जी मारोठ की 417वीं जयंती 29 मार्च को मनाई गई। पूज्य तनसिंह जी द्वारा रचित प्रार्थना के साथ प्रारम्भ हुए कार्यक्रम में दयालसिंह मुहाना ने रघुनाथसिंह जी का जीवन परिचय प्रस्तुत किया। जोधपुर विकास प्राधिकरण के अध्यक्ष महेन्द्रसिंह राठौड़ ने कहा कि ऐसे आयोजन हमे सतपथ पर चलने की प्रेरणा देते हैं। हमें महापुरुषों के जीवन से प्रेरणा लेकर आगे बढ़ना चाहिए। कार्यक्रम को देवीसिंह बडाबरा, दलपतसिंह, संत बालमुकुंदाचार्य जी, संत समतारामजी, रामसिंह आदि ने भी संबोधित किया। कार्यक्रम के अंत में प्रतिभावन छात्र-छात्राओं को पुरस्कार दिए गए।

जारी हैं दिशाबोध शाखाएं

शेरगढ़ में चल रहे दिशा बोध कार्यक्रम के तहत 30 मार्च को लवारन व लोड़ता गांव में कार्यक्रम आयोजित किए गए जिसमें कर्नल नारायणसिंह, प्रांत प्रमुख चन्द्रवीरसिंह भाळू, भेरूसिंह बेलवा आदि ने व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास के लिए आवश्यक बातें बताई। नियमित एवं निरन्तर अभ्यास की आवश्यकता पर जोर दिया। मगनसिंह लोड़ता ने रामायण व गीता के अध्ययन पर जोर दिया वहीं लोड़ता सरपंच कोजराजसिंह ने चरित्र की उज्ज्वलता का महत्त्व बताया। 1 अप्रेल को खिंयासरिया व आसरलाई में दिशा बोध शाखा संपन्न हुई।

जिया कंवर ने दिया बेटी बचाओ का संदेश

गूलर निवासी जिया कंवर बड़गूजर बेटी बचाओ का एवं सेना का सम्मान करने का संदेश देने हेतु उदयपुर से दिल्ली तक की दूरी स्केटिंग करते हुए तय करने वाले दल की सदस्या बनी एवं प्रधानमंत्री व राष्ट्रपति को ज्ञापन सौंपकर अपनी यात्रा का समापन किया।

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (मालिक) के लिए मुद्रक व प्रकाशक लक्ष्मणसिंह द्वारा गजेंद्र प्रिन्टर्स, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर-302003 (दूरभाष 2313462) से मुद्रित एवं ए/8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 **(दूरभाष: 2466353 व 2466387)** से प्रकाशित। सम्पादक- लक्ष्मणसिंह। Email:- pathprerak1997@gmail.com , Web site:- www.shrikys.org